❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 48 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 अक्तूबर, 2021 से रविवार 17 अक्तूबर, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

जम्मू-कश्मीर की आतंकवादी घटनाओं में मृतकों की आत्मिक शान्ति के लिए

आर्यसमाज द्वारा शान्ति यज्ञ एवं प्रार्थना सभा सम्पन्न

आर्यसमाज ने की आतंकियों पर कड़ी कार्यवाही करने की मांग : 1990 का इतिहास दोहराना चाहते हैं आतंकी

दिल्ली की सभी आर्यसमाजों ने रविवारीय साप्ताहिक यज्ञ में दिवंगत आत्माओं को स्मरण करके दी श्रद्धांजलि

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 9 अक्टूबर 2021 को आर्य समाज हनुमान रोड के सत्संग हॉल में जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा मारे गए निर्दोष लोगों की आत्माओं की शांति के लिए शांति यज्ञ और प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यमित्र ठुकराल जी, उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, मंत्री श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी, श्री सुखवीर आर्य जी, श्री कृपाल सिंह आर्य जी, शिव शंकर गुप्ता जी एवं आर्य जगत मूर्धन्य संन्यासी, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक और संचालक स्वामी प्रणवानंद सरस्वती जी, दिल्ली सभा, आर्य मीडिया सेंटर , अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के सभी कार्यकर्ता उपस्थित थे। सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारी, कार्यकर्ताओं ने दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए यज्ञ में आहुति देकर ईश्वर से प्रार्थना की। विशेष रूप से स्वामी प्रणवानंद जी ने वेद मंत्रों के माध्यम से प्रार्थना करते हुए दिवंगत आत्माओं की शांति तथा उनके परिवारों के लिए सहनशक्ति और सामर्थ्य की ईश्वर से कामना की। उपस्थित सभी महानुभावों ने 2 मिनट का मौन किया।

जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा इस निर्मम हत्याकांड को लेकर आर्यसमाज में काफी रोष व्याप्त है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

जम्मू-कश्मीर में आतंकी घटनाओं में दिवंगत निर्दोष लोगो की आत्मिक शान्ति के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रार्थना एवं शान्ति यज्ञ आयोजित किया गया। यज्ञ में आहुति देते हुए स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, धर्मपाल आर्य, अरुण प्रकाश वर्मा, शिवशंकर गुप्ता, सुखबीर सिह आर्य, शिवकुमार मदान, कृपाल सिंह आदि महानुभाव

गांव छबड़ा (कोटा) में आर्यसमाज के पुनर्निर्मित भवन शुभारम्भ

अमेरिका से पधारे डॉ. रमेश गुप्ता परिवार ने कराया पूरे भवन का पुनर्निर्माण

घर-घर पहुंचे वैदिक साहित्य एवं सत्यार्थ प्रकाश - विनय आर्य

डॉ. रमेश गुप्ता जी का कार्य प्रेरक : हम सबको अपने गांव की आर्यसमाजों के भवनों उत्थान और विकास की लेनी चाहिए प्रेरणा

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार को निरंतर गति प्रदान करने वाले आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा द्वारा आर्य समाज भवन के पुनर्निर्मित भवन का शुभारंभ का कार्यक्रम छबड़ा आदर्श विद्या मंदिर के सभागार में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक, संचालक स्वामी प्रणावानंद सरस्वती जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विनय आर्य जी, केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा जी, आयोजक डॉ. रमेश गुप्ता जी (अमेरिका), आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्डा जी इत्यादि महानुभावों ने द्वीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

- शेष पृष्ठ 4 पर

आर्यसमाज के नए भवन के नए भवन का उद्घाटन करते स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, श्री विनय आर्य जी, डॉ. रमेश गुप्ता जी एवं श्री सतीश चड्डा जी।

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा झारखण्ड लोहरदगा में संचालित गुरुकुलों एवं सेवा केन्द्रों का सभा अधिकारियों द्वारा नीरिक्षण

झारखण्ड के आदिवासी क्षेत्रों में और विद्यालयों का होगा निर्माण: मिशनरीज की कुचालों से समाज को बचाना होगा - विनय आर्य

आचार्य शरतचन्द्र और टीम कर ही है उल्लेखनीय समाज सेवा - जोगेन्द्र खट्टर

सार्वदेशिक आर्य प्रति निधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के अधिकारी झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में गतिशील सेवाकार्यों के निरीक्षण एवं सेवा प्रकल्पों और अधिक गति प्रदान करने हेतु 6 अक्तूबर, 2021 झारखंड गए। गुरुकुल शान्ति आश्रम के आचार्य, ब्रह्मचारियों द्वारा अधिकारियों का पारम्परिक तरीके से स्वागत किया।

इस दौरान गुरुकल शांति आश्रम लोहरदगा एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अमृत महोत्सव जागो और जगाओ गोष्ठी सम्पन्न हुई।

गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में श्री विनय आर्य, उपप्रधान, दयानंद सेवाश्रम संघ, श्री जोगेंद्र खट्टर, महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, झारखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री

- शेष पृष्ठ 4 पर

लोहरदगा स्थित गुरुकुल शान्ति आश्रम एवं अन्य संस्थानों का निरीक्षण करते अधिकारीगण श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्री विनय आर्य एवं स्थानीय अधिकारीगण।

देववाणी-संस्कृत

मानव शरीर रूपी यज्ञशाला

वेद-स्वाध्याय

सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वपन्जौसत्रसदौ च देवौ।।-यजुः. 34/55
ऋषिः कण्वः।। **देवता** - अध्यात्मं प्राणाः।। **छन्दः** भुरिग्जगती।।

शब्दार्थ - शरीरे सप्त ऋषयः प्रतिहिताः = शरीर में सात ऋषि स्थापित हैं **सप्त सदं अप्रमादं रक्षन्ति** = सार हैं जोकि इस सद (स्थन, यज्ञशाला) की प्रमाद-रहित होकर रक्षा करते रहते हैं। **स्वपतः सप्त आपः लोकं ईयुः** = सुषुप्तावस्था में ये सात ज्ञानप्रवाह अपने लोक में लीन हो जाते हैं, **तत्र च** = तो वहां भी **सत्रसदौ**= यज्ञ में बैठे रहने वाले **अस्वप्नजौ**= कभी न सोनेवाले **देवौ**= दो देव **जागृतः**= जागते रहते हैं।

विनय - यह शरीर भगवान ने तुझे यज्ञ करने के लिए दिया है। यह देव पवित्र यज्ञशाला है। इसमें बैठे हुए सात ऋषि भगवान् का यजन कर रहे हैं। आंख देख रही है, कान सुन रहा है, नासिका सूंघ रही है, त्वचा स्पर्श कर रही हैं, जिह्वा रस ले रही है, मन मनन कर रहा है और बुद्धि निश्चय कर रही है। ये सातों ऋषि शब्द, रूप, गन्ध, स्पर्श, रस का ज्ञान करते हुए, मनन और अवधारण करते हुए अपनी इन ज्ञान-क्रियाओं द्वारा भगवान् का यजन कर रहे हैं। ये ज्ञानशक्तियां हमारे अन्दर भगवद्यजन के लिए ही रखी गई हैं हमारी प्रत्येक ज्ञान-प्राप्ति भगवत्प्राप्ति के लक्ष्य से ही होनी चाहिए और इन सातों ज्ञानेन्द्रियों (बाह्य और अन्दर के करणों) के साथ एक-एक प्राणशक्ति भी काम कर रही है, जिन्हें सात शीर्ष प्राण करते हैं। ये सात प्राण इस 'सद्' की- इस यज्ञशाला की-रक्षा पूरी सावधानता के साथ, बिना प्रमाद किये कर रहे हैं। इस प्रकार इस यज्ञशाला में निरन्तर यह यज्ञ चल रहा है। हम हमेशा कुछ-न कुछ ज्ञान (अनुभव) करते रहते हैं-देखते, सुनते या मनन आदि करते रहते हैं। स्वप्नावस्था में भी यह देखना-सुनना बन्द नहीं होता। हां, सुषुप्ति-अवस्था में जब इन सात ऋषियों के 'आपः' (ज्ञानप्रवाह) सुषुप्ति के लोक मे लीन हो जाते हैं, हमें कुछ भी अनुभव नहीं हो रहा होता, तब क्या यह यज्ञ भङ्ग हो जाता है? नहीं, तब भी दो देव जागते हैं। ये दोनों देव कभी भी सोने वाले नहीं, इन्हें कभी नींद दबा नहीं सकती, अतः ये 'सत्रसदौ' तब भी यज्ञ में बैठे हुए जागते रहते हैं। ये हैं-(1) आत्म-चैत्न्य और (2) प्राण। इन सात ऋषियों को दर्शनशक्ति देनेवाला देव एक है और इन रक्षक प्राणों को प्राण-शक्ति देने वाले दूसरा है। ये दोनों देव-ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के देव-तब भी जागते रहते हैं और ज्ञान तथा कर्म द्वारा चलने वाले इस यज्ञ की इन दोनों शक्तियों को निरन्तर कायम रखते हैं, बल्कि पुष्ट करते रहते हैं, जब तक जीवन है तब तक चलता रहता है।

परन्तु क्या हम इस शरीर-यज्ञशाला को यज्ञशाला की भांति पवित्र रखते हैं? कहीं यज्ञ करने वाले ये सात ऋषि ज्ञानक्रिया द्वारा भगवद्यजन करना छोड़कर अपने ऋषित्व से भ्रष्ट तो नहीं हो जाते?

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कश्मीर में इन हत्याओं का दोषी कौन?

जम्मू कश्मीर में एक बार फिर हिन्दुओं को सिखों को चुन चुनकर निशाना बनाया जा रहा है पिछले हफ्ते पांच दिन में सात हत्या हुई हैं। अगर इसमें सेना के पांच जवान भी जोड़ दिए जाएं ये आंकड़ा दर्जन से ऊपर चला जायेगा। श्रीनगर में वर्षों से मेडिकल स्टोर चला रहे पंडित माखन लाल बिंदू की हत्या के कुछ ही घंटों के अंदर दो अन्य लोगों की हत्या हुई। जिनमें से एक बिहार के भागलपुर के रहने वाले वीरेंद्र पासवान थे। ये मामला अभी ठंडा भी नहीं हुआ था कि आतंकियों ने श्रीनगर में स्कूल के अंदर घुसकर दो शिक्षकों सतिन्दर कौर और दीपक चंद की गोली मारकर हत्या कर दी। इन सभी हत्याओं पर नजर डालें। तो वजह साफ हो जाती है कि इनकी हत्याओं के जरिये आतंकी हिदुओं, सिखों के साथ ही बाहर से आकर बसे लोगों के बीच दहशत फैलाकर उन्हें घाटी छोड़ने का इशारा दे रहे हैं।

इन हत्याओं के बाद देश भर से संवेदना के साथ सवाल भी खड़े हो रहे है कि चाहे 90 के दशक के पलायन की भयावहता का दौर हो या आज आखिर धर्म देखकर की जा रही हत्या करने वाले कौन लोग हैं? सवाल थोडा सा कड़वा हो सकता है क्योंकि जब-जब कश्मीर में ऐसे मामले आते हैं जिनमें गैर मुस्लिम को इस कारण अपनी जान गवानी पड़ती है कि वो हिन्दू, सिख या बौद्ध था। किन्तु हत्या करने वाले यानि हत्यारे हमेशा आतंकी कहे जाते है? क्या ये कोई नीति है या पाखंड? सवाल इस कारण क्योंकि कश्मीर के अन्दर जब को बुरहान वानी सेना के साथ मुठभेड़ में मारा जाता है तो वह मुसलमान होता है। और हजारों की भीड़ उसके जनाजे में शामिल होती है। किन्तु जब कोई माखनलाल बिदरू या सतिन्दर कौर की अमानवीय रूप से हत्या की जाती है तब हत्यारे आतंकी कहे जाते हैं, क्यों?

क्या अब खुलकर इस पाखंड के खिलाफ आवाज नहीं उठानी चाहिए कि बुरहान के जनाजे में शामिल हुई हजारों की भीड़ आखिर माखनलाल बिदरू या सतिन्दर कौर के अंतिम संस्कार में शामिल क्यों नहीं होती? सिर्फ इस कारण कि मरने वाले हिन्दू या सिख थे और मारने वाले मुसलमान? एक तरफ पाखंड रचा जाता है कि आतंक का को मजहब नहीं होता। किन्तु जब घाटी में कोई आतंकी मुठभेड़ में मारा जाता है तो घाटी में हजारों भीड़ पत्थर लेकर सड़कों पर निकल पड़ती है क्यों? सिर्फ इस कारण कि वो मुसलमान था और मजहब का नाम लेकर हत्या कर रहा था जिसे जिहाद कहा जाता है?

पिछले एक हफ्ते में कश्मीर घाटी में 90 के दशक की वापसी के संकेत मिलने लगे हैं। आतंकवादियों द्वारा चुन-चुनकर कश्मीरी पंडितों के साथ ही बाहर से आकर बसे लोगों को निशाना बनाकर मौत के घाट उतारा जा रहा है। और, इसके लिए 90 के दशक का ही आतंकी मॉडल कहो या इस्लामिक मॉडल, फिर से दोहराया जा रहा है। जिस तरह से 14 सितंबर 1989 को भाजपा के नेता पंडित टीका लाल टपलू को सरेआम मारकर कश्मीरी पंडितों को खौफ का पैगाम भेजा गया था। ठीक उसी तरह श्रीनगर के जाने-माने कश्मीरी पंडित माखन लाल बिदरु की सरेआम हत्या कर आतंकियों ने उस क्रूर और भयावह दौर की वापसी का पैगाम दे दिया। एक बार फिर 1400 लोग पलायन कर गये।

पिछले कुछ दिनों से भाजपा नेताओं की हत्या से शुरू हुआ ये सिलसिला अब फिर से कश्मीरी पंडितों तक आ गया है। आसान शब्दों में कहें, तो कश्मीर में जो शख्स भाजपा या संघ से जुड़ा होगा, आतंकियों की हिट लिस्ट में वो सबसे ऊपर होगा। इतना ही नहीं आतंकियों द्वारा किसी की भी हत्या के लिए केवल इतना ही काफी होगा कि उसका नाम हिदुओं वाला हो। फिर चाहे वह कश्मीर में मेडिकल स्टोर चलाने

.....अब इस खुली जिहाद को एक बार ढ़कने का काम शुरू किया जा रहा है कि कश्मीर में तालिबान आ गया। एक तरीके से फिर वहां पाकिस्तान और स्थानीय मदरसों द्वारा फैलाई जा रही नफरत को तालिबान के टोकरे के नीचे ढकने का काम बड़ी सफाई से किया जा रहा है। अगर आज माखनलाल की मौत की वजह तालिबान है तो 1989 से शुरू हुआ कश्मीरी हिन्दुओं का कत्लेआम और पलायन किसके कारण हुआ था? 21 साल पहले अनंतनाग जिले में सन 2000 में आतंकवादियों के हाथों 36 सिखों का कत्लेआम किसके कारण हुआ? क्या उसमें भी तालिबान था? ये क्यों नहीं कहा जाता है कि तालिबानी सोच उनके जेहन में सत्तर के दशक से ठुसी जा रही थी जिसका खामियाजा सेना के जवानों से लेकर हिन्दुओं सिखों लगातार भुगतना पड़ रहा है।.....

वाले माखन लाल बिदू हों या फिर एक छोटी सी रेहड़ी लगाने वाला वीरेंद्र पासवान।

अब इस खुली जिहाद को एक बार ढ़कने का काम शुरू किया जा रहा है कि कश्मीर में तालिबान आ गया। एक तरीके से फिर वहां पाकिस्तान और स्थानीय मदरसों द्वारा फैलाई जा रही नफरत को तालिबान के टोकरे के नीचे ढकने का काम बड़ी सफाई से किया जा रहा है। अगर आज माखनलाल की मौत की वजह तालिबान है तो 1989 से शुरू हुआ कश्मीरी हिन्दुओं का कत्लेआम और पलायन किसके कारण हुआ था? 21 साल पहले अनंतनाग जिले में सन 2000 में आतंकवादियों के हाथों 36 सिखों का कत्लेआम किसके कारण हुआ? क्या उसमें भी तालिबान था? ये क्यों नहीं कहा जाता है कि तालिबानी सोच उनके जेहन में सत्तर के दशक से ठुसी जा रही थी जिसका खामियाजा सेना के जवानों से लेकर हिन्दुओं सिखों लगातार भुगतना पड़ रहा है।

आज देश के आजादी और जम्मू कश्मीर की समस्या के लिए 70 साल पीछे जाकर बात करना बेमानी है। आज नेहरु की नीति और उसे कोसने से न तो मारे गये लोग वापिस आयेंगे न ही जो वहां जिन्दा है उनकी रक्षा होगी। धारा 370 हट चुकी है और हर हमले का जवाब कड़ाई दे देना होगा। दशकों से चली आ रही बीमारी का इलाज एक कड़वी दवाई से ही हो सकती है। समय आ गया है कि आतंकी बुरहान वानी के जनाजे में दिखने वाली हजारों की भीड़ को भारत के नागरिक नहीं बल्कि संभावित आतंकियों की तरह देखा जाए। भारत सरकार को मद्रास हाई कोर्ट के उस फैसले पर ध्यान देना चाहिए, जब पेरंबलूर जिले के कड़तूर गांव के हिन्दू पक्ष को वर्षों से निकाली जा रही रथ यात्राओं के मार्ग को मुस्लिम पक्ष के दबाव में सत्र न्यायालय द्वारा सीमित कर दिया गया था। कड़तूर गांव की मुस्लिम जमात का साफ

- शेष पृष्ठ 7 पर

जन्मजयन्ती (17 अक्तूबर) पर विशेष स्मरण

प्रज्ञाचक्षु गुरुवर विरजानन्द जी दण्डी : कितना जानते हैं आप?

प्र.- गुरु विरजानन्द का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उ.- गुरु विरजानन्द का जन्म सम्वत् 1835 वि. (सन् 1778 ई.) में पंजाब के करतारपुर नगर के निकट गाँव विशेष में हुआ था।

प्र.- विरजानन्द के पिता का नाम क्या था?

उ.- विरजानन्द के पिता का नाम श्री नारायण दत्त था, ये भारद्वाज गोत्री सारस्वत ब्राह्मण थे।

प्र.- विरजानन्द को प्रज्ञाचक्षु क्यों कहाँ जाता है?

उ.- विरजानन्द को पाँच वर्ष की अवस्था में शीतला रोग हुआ। जिसके कारण उनकी दोनों आंखें खराब हो गई और वे नेत्रहीन हो गए। परंतु आगे चल कर वे बहुत बड़े महान विद्वान हो गए थे। इसीलिए उन्हें प्रज्ञाचक्षु कहा जाता है।

प्र.- विरजानन्द की शिक्षा किस प्रकार प्रारम्भ हुई?

उ.- विरजानन्द की शिक्षा घर पर प्रारम्भ हुई इन्होंने अपने पिता से 8 वर्ष की अवस्था में व्याकरण पढ़ना प्रारंभ किया।

प्र.- विरजानन्द को बचपन में ही घर क्यों छोड़ना पड़ा?

उ.- विरजानन्द के बचपन में ही उनके माता-पिता का देहान्त हो गया, घर में बड़े भाई थे। परन्तु बड़े भाई का व्यवहार छोटे भाई के प्रति बड़ा कठोर था। बड़े भाई के असहनीय कठोर व्यवहार के कारण ही विरजानन्द को घर छोड़ना पड़ा।

प्र.- जब विरजानन्द ने घर छोड़ा उनकी अवस्था कितनी थी?

उ.- जब विरजानन्द ने घर छोड़ा उनकी अवस्था 14 वर्ष की थी।

प्र.- घर छोड़ कर विरजानन्द कहाँ गए?

उ. - घर छोड़ कर विरजानन्द ऋषिकेश गए।

प्र.- ऋषिकेश में विरजानन्द की दिनचर्या क्या थी?

उ.- नित्यकर्म, गंगा में स्नानादि से निवृत्त होकर वे गायत्री का जाप घण्टों किया करते थे। कन्दमूल आदि खाकर अपना गुजारा करते थे।

प्र.- विरजानन्द ने संन्यास आश्रम में कब और किस प्रकार प्रवेश किया?

उ.- ऋषिकेश से चलकर विरजानन्द कनखल पहुंचे। वहां संन्यासी पूर्णानन्द से भेंट हुई। विरजानन्द ने उन्हीं सें संन्यास की दीक्षा ली और स्वामी विरजानन्द कहलाए।

प्र.- कौमुदी का अध्ययन इन्होंने कब किया?

उ.- इन्होंने कौमुदी का अध्ययन कनखल में ही किया। कौमुदी व्याकरण के सूत्रों को अर्थ सहित सुनकर इन्होंने कंठस्थ कर लिया था।

प्र.- कनखल से स्वामी विरजानन्द कहाँ गए?

उ.- स्वामी जी कनखल से काशी गए।

प्र.- काशी में स्वामी विरजानन्द ने किस से क्या पढ़ा?

उ. - काशी में स्वामी विरजानन्द ने विद्याधर पण्डित से व्याकरण पढ़ा।

प्र.- पढ़ने के अतिरिक्त आप क्या करते थे?

उ. - पढ़ने के अतिरिक्त आप विद्यार्थियों को पढ़ाते भी थे। आप के पढ़ाने का ढंग इतना अच्छा था कि इनके पास बहुत से विद्यार्थी पढ़ने आने लगे।

प्र.- काशी से चलकर विरजानन्द कहाँ गए?

उ.- काशी से चलकर विरजानन्द कलकत्ता और सौरों गए।

प्र.- गुरु विरजानन्द की भेंट अलवर नरेश से किस प्रकार हुई?

उ.- एक दिन गंगा में खड़े होकर विरजानन्द स्त्रोत पाठ कर रहे थे। अलवर नरेश विनय सिंह इनका सुललित स्पष्ट उच्चारण सुन कर बड़े प्रभावित हुए। अत: इनके निवास स्थान पर जा कर इनसे अलवर चलने का अनुरोध करने लगे।

प्र.- 1917 विक्रमी (1860 ई.) में विरजानन्द को किस रत्न की प्राप्ति हुई?

उ.- 1917 विक्रमी 1860 ई. में विरजानन्द को दयानन्द सरस्वती नामक उस अमूल्य रत्न की प्राप्ति हुई जिसने अपने गुरु की इच्छाओं को पूर्ण करने में सारा जीवन लगा दिया। और महर्षि दयानन्द बनकर पूरी आभा के सारा संसार में चमकने लगा।

प्र.- गुरु विरजानन्द ने अलवर नरेश के किस आश्वासन पर उनके यहाँ जाना स्वीकार्य किया?

उ.- गुरु विरजानन्द ने अलवर नरेश के इस आश्वासन पर कि- "मैं आप के पास नित्य नियम पूर्वक अध्ययन करूंगा" उनके यहां जाना स्वीकार्य किया।

प्र.- गुरु विरजानन्द ने अलवर क्यों छोड़ा?

उ.- तीन-चार वर्ष अलवर में रहने के बाद अलवर नरेश के पाखंड में विश्वास के कारण विरजानन्द की अलवर में रहने की इच्छा न रही। इस बीच एक दिन अलवर नरेश समय पर पढ़ने के लिये न आ सके और उनकी नित्य की पढ़ाने की प्रक्रिया भंग हो गई। अत: गुरु विरजानन्द ने अलवर छोड़ दिया।

प्र.- अलवर से चलकर गुरु विरजानन्द कहां गए?

उ.- अलवर से चलकर गुरु विरजानन्द सोरों, मुरमान और भरतपुर होते हुए मथुरा पहुँचे।

प्र.- मथुरा में विरजानन्द ने पाठशाला की व्यवस्था किस प्रकार की?

उ.- मथुरा में गुरु विरजानन्द ने एक मकान किराए पर लेकर पाठशाला चलानी शुरु कर दी। पढ़ाई नि:शुल्क होती थी। पाठशाला कार्य के लिए कुछ नौकर भी रखे गये। पाठशाला के लिये अलवर, जयपुर और भरतपुर राज्य से धन की सहायता मिलती थी।

प्र.- मथुरा में क्या विशेष घटना घटी?

उ.- मथुरा में व्याकरण का विषय लेकर गुरु विरजानन्द और कृष्ण शास्त्री में शास्त्रार्थ हुआ। जिसमें कृष्ण शास्त्री का पक्ष कमजोर होने पर सेठ राधाकृष्णन ने कृष्ण शास्त्री को जीतने के लिये छल-कपट का पूरा सहारा लिया और अपने धन से काशी के पंडितों के पास से कृष्ण शास्त्री के पक्ष में व्याकरण खरीद लाए।

प्र.- काशी के पंडितों की गलत व्याख्या देने पर गुरु विरजानन्द ने क्या किया?

उ.- काशी के पंडितों ने गलत व्याख्या देने पर गुरु विरजानन्द ने काशी के पंडितों के पास एक पत्र भेजा और पूछा कि-काशी के पंडितों ने जो व्याख्या दी है उसका क्या प्रमाण है? क्या आधार है?

प्र.- विरजानन्द के पत्र का क्या प्रभाव पड़ा?

उ.- विरजानन्द का पत्र पाकर काशी के पंडितों में खलबली मच गई। उन्हें लिखना पढ़ा कि वास्तव में आपका पक्ष ठीक है किन्तु हम पहले कृष्ण-शास्त्री का पक्ष अनु-मोदित कर चुके हैं। अत: मजबूर हैं।

प्र.- इस घटना का विरजानन्द पर क्या प्रभाव पड़ा?

उ.- अब गुरुविरजानन्द व्याकरण पर और ध्यान देने लगे। जिससे उन्हें ये भली भांति निश्चय हो गया कि कौमुदी, मनोरमा, शेखर आदि व्याकरण भ्रम युक्त और प्रमादपूर्ण हैं। अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य ही व्याकरण के उत्तम ग्रंथ हैं।

प्र.- विरजानन्द ने आर्ष ग्रंथों की क्या पहचान बतलाई?

उ.- विरजानन्द के आर्ष ग्रंथों की पहचान बतलाई (1) ऋषियों के बताए ग्रंथ ओम के अर्थ से प्रभाव प्रारंभ होते हैं। (2) आर्ष ग्रथों में किसी के प्रति दुर्भावना, विद्वेष आदि नहीं होते हैं- इनमें सार्वभौमिकता होती है। (3) जिस ग्रंथ का भाष्य किसी प्रसिद्ध आचार्य ने लिखा हो वह आर्ष ग्रंथ है। ये तीन मुख्य लक्षण हैं। सूक्ष्म लक्षण और भी हैं।

प्र.- गुरु विरजानन्द का अपने शिष्यों से कैसा संबंध था?

उ.- गुरु विरजानन्द का अपने शिष्यों से पुत्रव्रत संबंध था। वे अपने शिष्यों के कष्टों का बराबर ध्यान रखते थे तथा उनके आचरण की देखरेख भी रखते थे।

प्र.- विरजानन्द की पाठशाला में प्रवेश के क्या नियम थे?

उ.- विरजानन्द की पाठशाला में प्रवेश के लिये दो नियम थे (1) वे स्वयं विद्यार्थी की परीक्षा लेते थे, कि उसकी स्मरण शक्ति कैसी है (2) वे विद्यार्थी से पूछते थे कि, उसने अब तक क्या पढ़ा है। अगर विद्यार्थी मनुष्य कृत ग्रंथों को पढ़ा हो तो उस विद्या को भूल जाने को और उन ग्रंथों को पानी में बहा देने की आज्ञा देते थे।

प्र.- 1917 विक्रमी (1860 ई.) में विरजानन्द को किस रत्न की प्राप्ति हुई?

उ.- 1917 विक्रमी 1860 ई. में विरजानन्द को दयानन्द सरस्वती नामक उस अमूल्य रत्न की प्राप्ति हुई जिसने अपने गुरु की इच्छाओं को पूर्ण करने में सारा जीवन लगा दिया। और महर्षि दयानन्द बनकर पूरी आभा के सारा संसार में चमकने लगा।

प्र.- विरजानन्द ने दयानन्द को सबसे पहले क्या पढ़ाना आरम्भ किया?

उ.- विरजानन्द ने दयानन्द को सबसे पहले अष्टाध्यायी और महाभाष्य पढ़ाना आरम्भ किया।

प्र.- शिष्य दयानन्द की शिक्षा पूरी होने पर गुरु विरजानन्द ने शिष्य से गुरु दक्षिणा के रूप में क्या मांगा?

उ.- शिष्य दयानन्द की शिक्षा पूरी होने पर गुरु विरजानन्द ने शिष्य से गुरु दक्षिणा मांगते हुए कहा-मैं तुम से तुम्हारे जीवन की दक्षिणा चाहता हूँ। प्रतिज्ञा करो कि आर्यवर्त में आर्ष ग्रन्थों की महिमा स्थापित करोगे। अनार्ष ग्रन्थों का खंडन करोगे और भारत में वैदिक धर्म की स्थापना में अपने प्राण तक अर्पित कर दोगे।

प्र.- गुरु विरजानन्द आर्य जाति के पतन का क्या कारण बतलाते थे?

उ.- संस्कृत के आधुनिक ग्रन्थ जो समाज में धर्म ग्रन्थ के नाम से प्रसिद्ध हैं उन्हीं को गुरु विरजानन्द आर्य जाति के पतन का कारण मानते थे।

प्र.- प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द का देहांत कब हुआ?

उ.- प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द का देहांत क्वार बदी 13 सम्वत् 1925 विक्रमी को हुआ।

प्र.- गुरु विरजानन्द की मृत्यु पर स्वामी दयानन्द ने कया कहा था?

गुरु विरजानन्द की मृत्यु पर स्वामी दयानन्द ने कहा था- आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।

- पं. चिन्तामणि आर्य, म्यांमार
की फेसबुक वाल से साभार

'वैदिक देवता और उनके वाहन' पुस्तक समीक्षा एवं विमोचन

प्रस्तुत पुस्तक वैदिक देवता और उनके वाहन में डॉ. योगानन्द शास्त्री जी ने हिन्दू धर्म को लेकर समाज में प्रचलित और प्रसारित भ्रांतियों का सप्रमाण निवारण किया है। आपने ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इंद्र, गणेश और कार्तिकेय। इन छह देवताओं के स्वरूप तथा उनके वाहनों की विस्तृत व्यख्या की है। इन समस्त देवताओं के कार्यों की विवेचना भी सारगर्भित तरीके से की है।

पुस्तक का विमोचन फ़ेसक्लब ऑफ इंडिया में कांग्रेस के महासचिव एवं म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह, लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ के उप कुलपति डॉ रमेश कुमार पांडेय और अनेक अन्य शिक्षा विदों की उपस्थिति में किया गया। सभी महानुभावों ने पुस्तक की विषयवस्तु और डॉ. योगानन्द शास्त्री जी ज्ञान गरिमा की उन्मुक्त हृदय से प्रशंसा की। वैदिक देवता और उनके वाहन पुस्तक मानव समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादायक तथा उपयोगी है, पुस्तक का स्वाध्याय कर पाठक लाभान्वित हों।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार की ओर से डॉ. योगानन्द शास्त्री जी को इस अनमोल कृति की रचना के लिए बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं।– ***महामन्त्री***

प्रथम पृष्ठ का शेष

कार्यक्रम में आर्य समाज कोटा समभाग के उपप्रधान ओम प्रकाश तापड़िया जी, उपप्रधान आर.सी आर्य जी, मंत्री लालचंद आर्य जी, वरिष्ठ मंत्री एडवोकेट चंद्रमोहन कुश्वाह, ओम प्रकाश आर्य जी, विदुषी डॉ. सुरेश आहुजा जी, प्रभुसिंह कुश्वाह जी, दिवानसिंह कुश्वाह जी, हरिदत्त शर्मा जी, रामनारायण कुश्वाह जी, सुरत सिंह यादव जी, आनंदी लाल कुश्वा जी, भैरो लाल शर्मा जी इत्यादि अनेक क्षेत्रीय अधिकारी, कार्यकर्त्ता और सदस्य उपस्थित थे। आर्य समाज कोटा द्वारा वैदिक साहित्य केंद्र भी स्थापित किया गया। स्वामी प्रणावानंद जी ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि वैदिक साहित्य अधिक से अधिक लोगों के पास पहुंचे ऐसा हम सभी को प्रयास करना चाहिए। श्री विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वैदिक धर्म संस्कृति के प्रचार के लिए वैदिक साहित्य सबसे बड़ा साधन है। अत: वैदिक साहित्य घर-घर पहुंचाना चाहिए। इसके स्टॉल चौराहों पर लगने चाहिए। वैदिक साहित्य से ही घरों में वैदिक संस्कारों की स्थापना संभव होगी। इस कार्यक्रम में वैदिक साहित्य को प्राप्त करने के लिए लोगों की भीड़ लगी रही। कार्यक्रम के उपरांत अर्जुन देव चड्डा जी ने सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के आयोजन में डॉ. बलबीर शास्त्री जी का विशेष योगदान रहा।

प्रथम पृष्ठ का शेष **अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ....**

आर्य राजकुमार श्रीवास्तव, आर्य वीर दल के प्रभारी अचार्य श्री शरदचन्द्र आर्य, आर्य वीर दल के प्रांतीय प्रशिक्षक आशीष कुमार आर्य, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संचालक, श्री सच्चिदानंद अग्रवाल, श्री विजय जायसवाल, श्री सतीश जायसवाल, श्री लाल नवल नाथ, श्री सहदेव, श्री कृपाशंकर सिह, श्री शिव शंकर सिह, श्री राजेंद्र खत्री, श्रीमती कमला देवी, श्रीमती प्रतिमा सिंह, श्रीमती कलावती, श्रीमती मंजू जायसवाल, श्री प्रदीप सिंह, श्री रवि दत्ता, श्री महादेव उरांव, श्री अर्जुन आर्य, श्रीकिशन आर्य एवं बालवाड़ी की बहने उपस्थित थी। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाना है, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ लगातार मानव निर्माण और राष्ट्र सेवा के कार्य कर रहा है। इस क्रम में लोहरदगा में शीघ्र ही एक आवासीय विद्यालय का निर्माण किया जाएगा। ग्रामीण क्षेत्र में सिलाई सेंटर खोला जाएगा। अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित बालवाड़ी के पढ़े हुए बच्चों को संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं की तैयारी हेतु निशुल्क कोचिंग और अन्य सुविधा देने का कार्य अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ करेगा। संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी ने कहा कि शिक्षा के साथ-साथ संस्कार देना आर्य समाज का उद्देश्य है। क्षेत्र में शिक्षा और चिकित्सा के नाम पर धर्मांतरण का जो खेल चल रहा है, उस पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा धर्मांतरण समाज के लिए एक घिनौना अपराध है। आचार्य शरदचंद्र आर्य ने कहा गुरुकुल शांति आश्रम समाज के लिए जो कुछ कर पा रहा है उसके पीछे दयानंद सेवाश्रम संघ का बहुत बड़ा योगदान है। सभी उपस्थित अधिकारियों का धन्यवाद किया गया तथा आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए सभी लोगों ने संकल्प लिया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल शान्ति आश्रम में आयोजित अमृत महोत्सव संगोष्ठी जागो और जगाओ को सम्बोधित करते श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, विनय आर्य जी एवं उपस्थित महानुभाव।

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर, जालंधर (पंजाब) के साप्ताहिक कार्यक्रम में पहुंचे सभा अधिकारी

हमें अपने अच्छे बुरे कर्मों का फल अवश्य मिलता है - विनय आर्य

11 अक्तूबर 2021 जालंधर। आर्य समाज मंदिर शहीद भगतसिंह नगर जालंधर में विशेष साप्ताहिक सत्संग में दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने ईश्वरीय कर्मफल सिद्धांत विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह संसार कर्म की खेती है। यहां अच्छे और बुरे कर्मों का फल मनुष्यों को अवश्य मिलता है। इसलिए सभी को ईर्ष्या, द्वेष से ऊपर उठकर परोपकार के कार्य करने चाहिए। संसार में जो भी समय परमार्थ में लगता है वहीं उपयोगी और लाभदायी होता है। इस अवसर पर श्री जयप्रकाश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में श्री दयाराम जी के जन्मदिन पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। मधुर भजन गायिका सोनू भारती जी एवं सुरेंद्र सिंह गुलशन ने प्रभु भक्ति के मधुर भजन प्रस्तुत किए। आर्य समाज के प्रधान रंजीत आर्य जी ने उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद करते हुए स्वामी दयानंद सरस्वती के बताए हुए मार्ग पर चलने का आवाह्न किया। उन्होंने वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए हर सप्ताह यज्ञ को विशेष रूप से आयोजित करने की बात कही। आर्य समाज के मन्त्री श्री हर्ष लखनपाल जी ने सभी याजिक परिवारों को सम्मानित करते हुए धन्यवाद किया। कार्यक्रम में विजय चावला जी, डिम्पल भाटिया, अश्वनी डोगरा, नवीन चावला, खुशबू मिश्रा, अशोक धीर इत्यादि स्त्री-पुरुष और बच्चें उपस्थित थे। सभी का धन्यवाद आर्य समाज की ओर से किया गया।

बाल बोध

अनुशासन से मिलती है सफलता

.....पाणिनी के मन में विचार आया कि जब कोमल धागों की रस्सी से कठोर लकड़ी भी घिस जाती है, उस पर निशान पड़ जाता है और मिट्टी के कणों से बना हुआ घड़ा मार्गों में अवरोध पैदा करने वाले पत्थर में भी अपना स्थान (गड्ढ़ा) बना सकता है, तो मैं विद्या क्यों नहीं प्राप्त कर सकता। इन जड़ वस्तुओं से प्रेरणा लेकर पाणिनि ने कठोर परिश्रम और पुरुषार्थ किया। जिसके फलस्वरूप उन्होंने संसार की अष्टाध्यायी जैसा व्याकरण का महान ग्रन्थ प्रदान किया। जो आज भी हमारा मार्गदर्शन करके उनके परोपकार की सुगंध फैला रहा है।.....

अनुशासन से विद्यार्थी जीवन में सफलता प्राप्त करता है। अपने जीवन में व्यवस्थित दिनचर्या को अपनाओ। किस समय क्या कार्य करना है, यह सब पहले से ही निश्चित होना चाहिए। प्रात: काल किस समय जागना है, कब व्यायाम करना है और स्नान करना है। पाठशाला किस समय जाना है, इसका ध्यान भी स्वयं होना चाहिए और स्कूल में भी अनुशासित रहकर अध्ययन करना जरूरी है। सायंकाल किस समय खेलना है, किस वक्त गृहकार्य करना है और किस समय शयन करना है, इन सब कार्यों का समय निर्धारित होना चाहिए। फौज में अफसर का हुक्म चलता है लेकिन आप स्वयं पर हुक्म चलाने वाले बनिए।

दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने स्वयं को महान बनाने के लिए समय का सदुपयोग किया। दूसरी तरफ जो समय को बरबाद करता है, उसे समय बरबाद कर देता है। जो अपने जीवन में व्यवस्थित दिनचर्या और अनुशासन को अपनाता है उसका समय व्यर्थ व्यय नहीं होता। आलस्य और लापरवाही के कारण विद्यार्थी अपने कार्य को कल-परसों पर टाल देता है। ऐसा विचार करता है कि कल करेंगे, अभी कर लेंगे, पहले थोड़ा विश्राम कर लेता हूं। इस तरह आलस्य करने से विद्यार्थी अवसर चूक जाता है। और अवसर चूका हुआ किसान और डाल से चूका हुआ वानर धड़ाम से नीचे गिरता है। इसलिए अनुशासित होकर, सजग होकर विद्यार्थी को अपनी प्रतिभा का निरन्तर विकास करना चाहिए।

मनुष्य आजीवन विद्यार्थी रहता है। विनोबा भावे वृद्ध अवस्था तक अनुशासन में रहकर विद्या अर्जित करते रहें। उन्होंने अपने जीवन में चौदह भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। अपने हाथ में सलेट लेकर आलस्य रहित होकर निरन्तर कुछ-न-कुछ सीखने का प्रयास करते रहते थे। किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा-इस अवस्था में अनेक भाषाएं सीखकर आप क्या सिद्ध करना चाहते हैं? उन्होंने मुस्कराते हुए कहा-हमें भगवान् ने अनमोल बुद्धि दी है, अगर हम इसे किसी कार्य में न लगाएं तो यह व्यर्थ के कार्यों में संलिप्त हो जाएगी। कुछ लोग अन्तिम समय तक गलत बातें सीखते रहते हैं, तो हम अच्छी बातें क्यों न सीखें। कुछ सीखने के लिए प्रयासरत रहने वाले व्यक्ति का दिमाग नया रहता है। वह अच्छी और ऊंची कल्पनाएं करता है। और वह ऊंचा स्थान भी प्राप्त कर लेता है।

अगर विद्यार्थी परिश्रमी है और पुरुषार्थी है तो उसकी बुद्धि सदैव प्रखर रहती है। वैसे दिमाग किसी का मोटा-पतला नहीं होता, पर कुछ बनने की और आगे बढ़ने की लगन मन में होनी चाहिए लगन से व्यक्ति गगन तक पहुंच जाता है। कालीदास पेड़ की उस डाली को काट रहा था जिस पर स्वयं बैठा था। किसी राहगीर ने कहा क्या कर रहे हो? नीचे गिर जाओगे। जब कालीदास ने यह नहीं सोचा तो वही हुआ, डाली कटी और व ध ाड़ाम से जमीन पर गिरा। वही कालीदास अपनी पत्नी विद्योत्मा की प्रेरणा और अपने अथक परिश्रम से आज महाकवियों की श्रेणी में स्मरण किया जाता है। उन्होंने संस्कृत में **"अभिज्ञान शाकुंतलम"** जैसे काव्यों की रचना की, जो आज भी प्रसिद्ध हैं।

व्याकरण के जनक पाणिनि को उनके गुरु ने अयोग्य समझकर कक्षा से निष्कासित कर दिया था। वह दु:खी मन से इधर-उधर भ्रमण कर रहे थे। उनको प्यास लगी तो वह कुएं के पास गए, जहां महिलाएं पानी भर रही थीं। जब उसने वहां पानी पीकर प्यास बुझाई तब उसको वहां एक अद्भुत दृश्य दृष्टिगत हुआ। पाणिनि अपनी जिज्ञासा प्रकट करते हुए महिलाओं से प्रश्न करते हैं कि इस कठोर लकड़ी की मुंडेर पर और ठोस पत्थर की शिला पर गहरे निशान (गड्ढ़े) कैसे पड़े। महिलाओं ने उपहास करते हुए कहा-हे नादान मुसाफिर। कोमल रस्सी के अनेक बार आवागमन की रगड़ से मुंडेर पर निशान पड़ ही जाता है और फिर मिट्टी के घड़े को बार-बार पत्थर की शिला पर रखने से ठोस पत्थर में भी घड़े को रखने का स्थान बन ही जाता है। अर्थात् गड्ढ़ा हो ही जाता है, इसमें आश्चर्य की

- शेष पृष्ठ 6 पर

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

He even gave him a copy of the agreement which had been drawn up. Swami Dayanand tore it into pieces and said, “Go away. I will not take any action against you. But remember it is a sin to make an attempt on anybody's life. You should never be a party to a thing of this kind."

There is another incident which shows Swami Dayanand's generosity and spirit of forgiveness. Once Swami Dayanand was at Allahabad where he was held in very high respect by very eminent citizens. One of his great admirers was Sir Sunder Lal, who was a judge of the Allahabad High Court. He went to see Swami Dayanand one morning but found him saying his prayers. He waited until Swami Dayanand had finished his prayers. He then had a talk with Swami Dayanand. After some time Sir Sunder Lal wanted to go away, but Swami Dayanand asked him to stay. He said he would show him something interesting very soon.

Only a few minutes had passed, when a Brahmin came in. He seemed to be very pious and humble, and touched Swami Dayanand's feet as soon as he came. In his hands he had a basket of sweets which he offered to Swamiji. Swami Dayanand accepted this present with thanks. He then took a piece of sweet from the basket and asked the ‘Brahmin to eat it, but he would not. Swami Dayanand pressed him again and again, but he still refused. Sir Sunder Lal then took a piece from the basket and threw it to a dog. No sooner did the dog eat it, than it began to writhe with pain. In a short time it died.

Sir Sunder Lal and his friends realized that the man had wanted to poison Swami Dayanand. They thought it proper, therefore, that he should be handed over to the police. “He must be brought to justice," they said. But Swami Dayanand would not allow them to do so. He forbade them to take any such steps. He just sent the Brahmin away after giving him a few words of advice.

Swami Dayanand was a great lover of truth. Nothing on earth could tempt him to tell a lie. He was always prepared to speak the truth and say what he felt. None could stop him from this because he was not afraid of anybody.

Once when he was in Bareilly he delivered a very fine lecture. This was attended not only by Indians but also by Englishmen. They included officials and priests as well as the Commissioner of the division. During his lecture Swami Dayanand criticized Christianity, a thing which was not liked by the Christians present. The Commissioner was especially annoyed. He wanted to convey to Swami Dayanand that such criticism was uncalled for, but he did not know how to do it.

.....Swami Dayanand delivered another lecture at which the Commissioner was also present. During it Swami Dayanand said, “It is not an easy thing to speak the truth in this world. When I say something that I feel to be true, people get annoyed with me. One man comes and says that the Collector feels annoyed at my remarks. Another comes forward and says the Commissioner feels offended with me. A third man comes to me and says that the Governor will prosecute me for what I have been saying. But I wish to say only one thing to these people. I will speak the truth, at all costs. I do not care who feelsannoyed with it. I would do so even if any emperor were to feel offended with me. There is no greater sin than this, that a person should conceal from the world the truth as he sees it.....

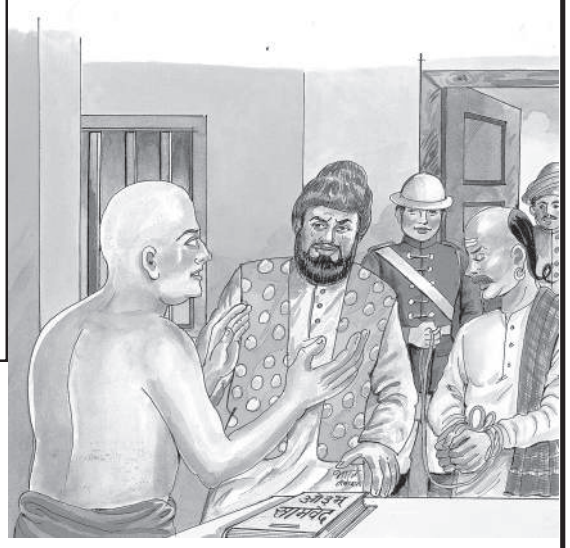

Soon he found a way. He sent for L. Lakshmi Narain, the Official Treasurer, at whose bungalow Swami Dayanand was staying. He asked him to tell Swami Dayanand that he should not be so hard in his criticism of other religions. The gentleman promised to tell everything to the Swami. The very next day he went to see Swami Dayanand. On the way to the bungalow he kept repeating to himself what he wanted to say to Swamiji. But when he was face to face with him, he could not utter even a single word. But Swami Dayanand encouraged him to speak out his mind. It was hen with great difficulty that he uttered a few words. Swami Dayanand, however, understood what he had meant to say.

Next day Swami Dayanand delivered another lecture at which the Commissioner was also present. During it Swami Dayanand said, “It is not an easy thing to speak the truth in this world. When I say something that I feel to be true, people get annoyed with me. One man comes and says that the Collector feels annoyed at my remarks. Another comes forward and says the Commissioner feels offended with me. A third man comes to me and says that the Governor will prosecute me for what I have been saying. But I wish to say only one thing to these people. I will speak the truth, at all costs. I do not care who feelsannoyed with it. I would do so even if any emperor were to feel offended with me. There is no greater sin than this, that a person should conceal from the world the truth as he sees it."

Swami Dayanand was once at Udaipur. There he was a guest of the Maharaja, who treated him with the utmost respect. One day in the course ofa talk he said to Swami Dayanand, “Sir, in my State I have a big temple of Shiva. This has an estate of several lacs attached to it. If you care, I can appoint you its Mahant. But there is one condition; and it is this, that you will have to support idol-worship." As soon as Swami Dayanand heard it, he felt sorry for the king. “Alas! You misunderstand me," he said. “Do you think I care for wealth or power?

For me none of these things has any charm. I will do and say what my God bids; and I think it is His command that I should speak against idol-worship. Am I, therefore, not justified in obeying Him rather than you?" On hearing this, the king kept silent. He did not dare afterwards speak a word about it to him. He felt that day that Swami Dayanand loved truth greatly and would not sacrifice it for anything in the world.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध — शरीरावयवप्रकरणम्

गतांक से आगे –

संस्कृत	हिन्दी
448. स काणो धूर्तोऽस्ति।	वह काना धूर्त्त है।
449. द्रष्टव्यमयमन्धः सचक्षुष्कवत् कथं गच्छति?	देखो यह अन्धा आंखवाले के समान कैसे जाता है?
450. तवाऽक्षिणी कदा नष्टे?	तेरी आंखें कब न ट हुईं?
451. यदाहं पञ्चवर्षोऽभूवम्।	जब मैं पांच वर्ष का हुआ था।
452. इदानीम्मन्नेत्रे रोगोऽस्ति स कथं निवर्त्स्यते?	इस समय मेरे नेत्र में रोग है, वह कैसे निवृत्त होगा?
453. अञ्जनाद्यौषधसेवनेन निवर्त्तिष्यते।	अंजन आदि औषध के सेवन से निवृत्त होगा।
454. तस्य नासिकोत्तमास्ति।	उसकी नाक अति सुन्दर है।
456. भवानपि शुकनासिकः।	आप भी तोते के सी नाकवाले हैं।
457. घ्राणेन गन्धं जिघ्रसि न वा?	नाक से गन्ध सूंघता है वा नहीं?
458. श्लेष्मकफत्वान्मया नासिकया गन्धो न प्रतीयते।	सरदी कफ (जुकाम) होने से मुझको नासिका से गन्ध की प्रतीति नहीं होती।
459. अयं पुरुषः सुकपोलोऽस्ति।	यह पुरुष अच्छे गालवाला है।
460. अतिस्थूलत्वादस्य नाभिर्गम्भीरा।	बहुत मोटा होने से इसकी नाभि गहरी है।
461. त्वमद्य प्रसन्नमुखो दृश्यसे किमत्र कारणम्?	तू आज प्रसन्नमुख दिखाई देता है, इसमें क्या कारण है?
462. अयं सदैवाह्लादितवदनो विद्यते।	यह सब दिन प्रसन्नमुख बना रहता है।
463. अस्यौष्ठौ श्रेष्ठौ वर्त्तेते।	इसके ओष्ठ बहुत अच्छे हैं।
464. अयँल्लम्बोष्ठत्वाद्भयंकरोऽस्ति।	यह लम्बे ओष्ठवाला होने से भयंकर है।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 5 का शेष

अनुशासन से मिलती है सफलता ...

क्या बात है।

पाणिनि का भ्रमित मन शांत हो गया। उसके मन में विचार आया कि जब कोमल धागों की रस्सी से कठोर लकड़ी भी घिस जाती है, उस पर निशान पड़ जाता है और मिट्टी के कणों से बना हुआ घड़ा मार्गो में अवरोध पैदा करने वाले पत्थर में भी अपना स्थान (गड्ढ़ा) बना सकता है, तो मैं विद्या क्यों नहीं प्राप्त कर सकता। इन जड़ वस्तुओं से प्रेरणा लेकर पाणिनि ने कठोर परिश्रम और पुरुषार्थ किया। जिसके फलस्वरूप उन्होंने संसार की अष्टाध्यायी जैसा व्याकरण का महान ग्रन्थ प्रदान किया। जो आज भी हमारा मार्गदर्शन करके उनके परोपकार की सुगंध फैला रहा है। इस प्रसंग के अनुरूप कवि का सुन्दर कथन है-

करत-करत अभ्यास के,
जड़ मति होत सुजान।
रस्सी आवज-जात ते,
सिल पर परत निशान।।

अनुशासन में रहकर निरन्तर अभ्यास करने से व्यक्ति महान बनता है। कहा गया है कि सोए हुए शेर के मुख में शिकार स्वयं नहीं जाता। शिकार करने के लिए शेर को परिश्रम करना पड़ता है। हालांकि शेर शक्तिशाली जानवर है उसे जंगल का राजा कहते हैं लेकिन उसे शिकार करने के लिए दौड़ लगानी पड़ेगी, मेहनत करनी पड़ेगी तभी वह अपनी भूख शान्त कर पाएगा। इसी तरह विद्यार्थी के अन्दर शक्ति है, लेकिन यह बहुत बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है अपनी शक्ति का सही सदुपयोग करना, वरना शक्ति यूं ही समाप्त हो जाती है।

विद्यार्थी कितना भी योग्य हो, बहादुर हो लेकिन अनुशासन न होने से योग्यताएं व्यर्थ हो जाती हैं। अनुशासन विद्यार्थी को उसके स्वरूप का ज्ञान कराता है। उसकी सोई हुई शक्तियों को जागृत करता है और उसके जीवन-यापन में साधक होता है। एक साज है उसको भी सही तरीके से बजाने पर ही संगीत निकलता है। वरना साज होने पर भी संगीत नहीं निकलता। सितार का एक तार ज्यादा कसा हो और एक ढ़ीला हो तो बात नहीं बनती। दोनों तार सही स्थिति में हों तो संगीत निकलता है। इसलिए अपने जीवन में अनुशासन और परिश्रम को अपनाकर सफलता प्राप्त करो।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज द्वारा शान्ति यज्ञ एवं प्रार्थना सभा

इस जघन्य हत्याकाण्ड को लेकर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि तालिबानियों के सक्रिय होने से पाकिस्तान के होंसले बुलन्द हो गए हैं। भारत में हिन्दू समुदाय विशेष पर हमला कर रहे हैं। भारत सरकार पाकिस्तान के विरुद्ध कार्यवाही कर इस पर अंकुश लगाए।

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने बेगुनाह, निर्दोष लोगों की हत्या पर दुख जताते हुए कहा कि यह अत्यन्त दु:खद और निन्दनीय अपराध है, इसे सख्ती से रोका जाना चाहिए। आतंकवादियों ने जिस तरह शहर के डाउनटाउन इलाके के ईदगाह स्थित सरकारी ब्वॉयज हायर सेकेंडरी स्कूल में घुसकर आतंकियों ने प्रिंसिपल समेत अल्पसंख्यक शिक्षकों की हत्या कर दी। इस आतंकी हमले में सिख समुदाय से जुड़ीं बडगाम की रहने वाली प्रिंसिपल सुपिंदर कौर और शिक्षक जम्मू के दीपक चंद की मौके पर ही मौत हो गई। गोलियां बरसाने के बाद आतंकी मौके से भाग निकले। वारदात के बाद पूरे इलाके में तलाशी अभियान चलाया गया, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला था। घाटी में पिछले पांच दिनों में आतंकियों ने सात नागरिकों सहित कई सैनिकों को भी अपना निशाना बनाया है। अकेले छह हत्याएं ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर में हुई। बताया यह भी जाता है कि आतंकवादियों ने पहले बाहर बैठे स्कूल के शिक्षकों के परिचय पत्र चेक किए और उनसे मोबाइल फोन ले लिए। आतंकी दो टीचरों को किनारे पर ले गए और फिर उन्हें गोलियों की आवाज सुनाई दी। इसके बाद उन्होंने खून में लथपथ दो शिक्षकों को जमीन पर पड़ा देखा। इस दुर्दान्त हमले की टीआरएफ ने जिम्मेदारी लेते हुए कहा, 15 अगस्त को तिरंगे को सैल्यूट करने के लिए विद्यार्थियों को बाध्य करने का बदला लिया गया है। इससे पहले छह अक्तूबर को श्रीनगर में कश्मीरी पंडित कारोबारी एमएल बिंदरू, गोलगप्पा विक्रेता बिहार निवासी वीरेंद्र पासवान की गोली मारकर हत्या कर दी थी।

इन धर्मान्ध मजहबी लोगों द्वारा जिन्हें दुनिया बिना मजहब वाले आतंकी कहती है, इनकी मजहबी घृणित आपराधिक सोच को बदलने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए, इनके खिलाफ सख्त एक्शन लेना चाहिए, इस तरह की मांग करने वाले आर्य नेता,अधिकारी और कई कार्यकर्ता उपस्थित थे। पूरे कार्यक्रम का आर्य सन्देश टीवी चैनल पर सीधा प्रसारण किया गया, परिणाम स्वरूप हजारों लोगों ने मृतकों की आत्मा की शांति के लिए लाईव श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

निर्वाचन समाचार

रामगली आर्यसमाज
सी-13 हरि नगर घंटाघर, नई दिल्ली

प्रधान : श्रीमती वेद कुमारी आर्या
मन्त्री : श्रीमती पूजा आर्या
कोषाध्यक्ष : श्री सुभाष चन्द्र मल्होत्रा

शोक समाचार

श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी को मातृशोक

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी की पूज्य माताजी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संस्थापक महामन्त्री एवं पूर्व प्रधान स्व. श्री सरदारी लाल वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती आशा वर्मा जी का दिनांक 11 अक्तूबर, 2021 को 95 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंजाबी बाग स्थित शमशान घाट पर आर्यसमाज के सम्वर्धकों द्वारा सम्पन्न कराया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 14 अक्तूबर, 2021 को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 2 का शेष

कहना था कि गांव में मुस्लिम आबादी ज्यादा है, तो यहां सिर्फ यानी मूर्ति पूजा के लिए को जगह नहीं है।

इसमें भला हो मद्रास हाई कोर्ट का जो उसने मुस्लिम जमात को फटकार लगाते हुए कहा कि इस तर्क के हिसाब से तो हिदू बहुल भारत में को मुस्लिम आयोजन नहीं हो सकेगा। यह असहिष्णुता की पराकाष्ठा है और इसकी नींव कश्मीर में बहुत पहले ही रखी जा चुकी है। सबसे बड़ी बात ये है कि ऐसे सैकड़ों उदाहरणों से लिस्ट भरी हुई है। इसी महीने अनंतनाग में स्थित 100 साल पुराने मां बरघाशिखा भवानी के मंदिर पर हमला किया गया, उसमें तोड़ फोड़ हुई, इसके बाद सामूहिक हत्याओं का दौर चल पड़ा। ये घटनाएं आइडिया ऑफ इंडिया के खिलाफ हैं। अगर भारत सरकार आज से ही कड़े कदम उठाना शुरू नहीं करेगी, तो नासूर बन चुकी जम्मू-कश्मीर की समस्या देश के लिए घातक हो जाएगी। लोग पलायन करते रहेंगे हम सत्तर साल पीछे का रोना रोते रहेंगे। अगर वो धर्म पूछकर हत्या कर रहे है, इसमें साफ़ स्पष्ट रूप से मजहब पर सवाल उठने चाहिए। आखिर मरने वाला जब हिन्दू या सिख हो सकता है तो मारने वाला मुसलमान क्यों नहीं हो सकता? - ***सम्पादक***

प्रेरक प्रसंग

एक और दीवाना संन्यासी

आर्यसमाज में आत्मानन्द नाम के कई संन्यासी हुए हैं। एक आत्मानन्द तो पौराणिकों में लौट गये थे। यह बीसवीं शती के आरम्भ या उन्नीसवीं शती के अन्त की घटना है, परन्तु एक स्वामी आत्मानन्दजी ऋषि के साथ भी रहे। वे ऋषिजी के साथ यात्रा में आवास तथा भोजन की व्यवस्था किया करते थे।

ये संस्कृत व हिन्दी ही जानते थे। पुराणों के प्रकाण्ड विद्वान् थे। व्याख्यानों में पुराणों की कथाएँ सुनाकर बहुत हँसाते थे। ये शास्त्रार्थ भी करते थे। ये प्रतिक्षण शास्त्रार्थ के लिए तैयार रहते थे।

इन्होंने देश के सब अहिन्दी भाषी प्रदेशों में भी प्रचार किया। कई आर्यसमाज बनाये। ब्रह्मा भी प्रचारार्थ गये। लंका की भाषा का ज्ञान नहीं था, तथापि वहाँ भी प्रचारार्थ पहुँच गये और बड़े-बड़े लोगों से वहाँ सम्पर्क कर पाये। अपनी बात कही। विशेषता यह कि वहाँ बिना किसी सभा के सहयोग के पहुँच गये।

आपने देश के सब भागों में वैदिक धर्म प्रचार के लिए यात्राएँ कीं। कोई बुलाये या न बुलाये, वे स्वयं ही घूमते-घूमते प्रचार करते हुए कहीं भी पहुँच जाते। कमालिया आर्यसमाज का गढ़ बन गया। वहाँ आर्यसमाज का गुरुकुल भी था। इसी गुरुकुल से हीरो साईकल के संचालकों के बड़े भ्राता दिवंगत दयानन्दजी जैसे ऋषिभक्त निकले।

यात्रा करते-करते ऊबते न थे, न थकते थे। एक बार सिरसा हरियाणा में गये। तब पोंगापंथी आर्यसमाज के नाम से ही चिढ़ते थे। आर्यसमाज वहाँ था ही नहीं। आर्यसमाज का नाम सुनते ही विरोधियों ने शोर मचा दिया।

स्वामीजी को रहने को भी स्थान न मिला, भोजन तो किसी ने देना ही क्या था। हिन्दुओं ने सोमनाथ का मन्दिर तोड़नेवाले लुटेरों के भाईयों को तो उसी मन्दिर के समीप मजिस्द बनवा दी। यह आत्मघाती हिन्दू सब-कुछ सहन कर सकता है- इससे सहन नहीं होता तो आर्यसमाज का प्रचार सहन नहीं हो सकता।

सूखे चने चबाकर आर्यसंन्यासी सिरसा में डट गया। वहाँ ऐ प्रसिद्ध सेठ का सदाव्रत जारी रहता था। उस सदाव्रत से भी वेदज्ञ आर्यसंन्यासी को भोजन न दिया गया। साधु के पग डगमगाये नहीं, लड़खड़ाये नहीं, श्री महाराज घबराये नहीं। वहीं अपने कार्य में जुटे रहे। पाखण्ड खण्डिनी ओ३म् पताका फहराकर दण्डी स्वामी आत्मानन्दजी वेद की निर्मल गंगा का ज्ञान-अमृत पिलाने लगे।

यह उन्हीं की साधना का फल है कि आगे चलकर सिरसा आर्यसमाज का एक गढ़ बन गया। पण्डित मनसारमजी वैदिक तोप, स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज-जैसों ने सिरसा को अपनी कर्मभूमि बनाया। स्वामी श्री बेधड़कजी महाराज-जैसे अद्वितीय तपस्वी दलित वर्ग में जन्में थे। उस पूज्य ऋषिभक्त बेधड़क स्वामी की कर्मभूमि भी सिरसा रहा है।

आर्यमिशनरी पूज्य महाशय कालेखाँ साहबजी बाद में कृष्ण के नाम से इसी क्षेत्र में कार्य करते रहे। वे सिरसा के पास ही जन्मे थे और सिरसा समाज की ही देन थे। महाशय काले खाँ जी लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज के प्रियतम शिष्यों में से एक थे।

यह सब स्वामी आत्मानन्दजी की साधना का फल था। अन्तिम दिनों में ये संन्यासी अजमेर में रहने लगे। अपना सब-कुछ समाज की भेंट कर दिया। उनकी अन्ति इच्छा यही थी कि उनका शरीर अजमेर में छूटे और उनका दाह-कर्म भी वहीं किया जाए जहाँ ऋषिजी का अन्तिम संस्कार किया गया था। स्वामीजी का निधन 23 जुलाई 1908 ई. को कानपुर में हुआ। उनका दाह-कर्म संस्कार वहीं गंगा तट पर कानपुर में किया गया।+

आर्यसमाज अजमेर उनका उत्तराधिकारी था। उनकी स्मृति में आर्यसमाज अजमेर ने कोई स्मारक न बनाया।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 11 अक्तूबर, 2021 से रविवार 17 अक्तूबर, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 14-15/10/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 अक्तूबर, 2021

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।
'मोपला'
प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह